ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-10* November- 2020
Innovation The Research Concept

# साहस एवं बलिदान का शाश्वत प्रतीक : वीरांगना पन्नाधाय

# The Eternal Symbol of Courage and Sacrifice: Veerangana Pannadhyay

Paper Submission: 15/11/2020, Date of Acceptance: 25/11/2020, Date of Publication: 26/11/2020

**विजय सिंह मावई**
सह आचार्य
इतिहास विभाग,
राजकीय कन्या महाविद्यालय,
सवाई माधोपुर, भारत

**सारांश**

भारतीय इतिहास में पन्नाधाय का नाम मातृत्व, वात्सलय, करूणा, साहस एवं बलिदान का शाश्वत प्रतीक बन गया है। जिन्होनें स्वामी भक्ति को सर्वोपरि मानते हुए अपने पुत्र चन्दन का बलिदान दे दिया। उदय सिंह को पन्ना ने अपने पुत्र के समान पाला था। पन्नाधाय ने उदयसिंह की माँ कर्मावती के सामूहिक आत्मबलिदान द्वारा स्वर्गारोहण पर बालक की परवरिश करने का जो दायित्व संभाला था उसे पूरी लगन एवं निष्ठा से परिपूर्ण करते हुए अपने स्वामी की प्राण रक्षा के लिए अपने पुत्र का बलिदान देकर इतिहास रच दिया। अपने स्वामी की प्राण रक्षा के लिए इस तरह का बलिदान इतिहास में पढ़ने को और कहीं नहीं मिलता। पन्नाधाय एक बहुत बड़ा उदाहरण है नारी शक्ति के त्याग और बलिदान का।

Pannadhay's name has become an eternal symbol of motherhood, Vatsalaya, compassion, courage and sacrifice in Indian history. Those who considered Swami Bhakti as paramount, sacrificed their son Chandan. Uday Singh was reared by Panna like his son. Pannadhay created history by sacrificing his son to protect the life of his master, fulfilling the responsibility of raising the child on ascension by the collective self-sacrifice of Uday Singh's mother Karmavati. This kind of sacrifice to protect the life of his master is nowhere to be read in history. Pannadhay is a great example of the sacrifice and sacrifice of women power.

**मुख्य शब्द :** वीरांगना, साहस एवं बलिदान, स्वामी भक्ति, ललनाएँ, वैधानिक महाराणा व मेवाड़ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।
Veerangana, Courage And Sacrifice, Swami Bhakti, Lalna, Historical Background Of The Legal Maharana And Mewar.

**प्रस्तावना**

प्राचीन काल से ही भारत में वीरता, साहस एवं बलिदान की गौरवषाली परम्परा रही है। इक्ष्वाकु के वंशजों ने प्रथम बार आर्यावर्त के उत्तरापथ के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में वैदिक धर्म और संस्कृति की पताका फहराई थी।[1] रघुवंशियों के नूतन वंशों में जो वंश सर्वाधिक शूरवीर, साहसी और पराक्रमी वंश था। वह अपने गुण कर्म स्वभाव के कारण 'गुसुर, गुर्जर या गूजर' कहलाया।[2]

भारतीय संस्कृति को वैभवपूर्ण बनाने में गुर्जर–पुरूषों की भांति गुर्जर–नारियों का भी विशेष योगदान रहा है। जिस प्रकार गुर्जर पुरूषों ने भारतीय धर्म और संस्कृति के संरक्षण के लिए संघर्ष किये तथा अपने साम्राज्यों की स्थापना की और अपनी राष्ट्रभक्ति की भावना का परिचय दिया, अपने साहस और पौरूष का परिचय दिया उसी प्रकार गुर्जर ललनाओं ने भी समय–समय पर ऐसे उदात्त कार्य किये जिनसे राष्ट्रीय गौरव में अभिवृद्धि हुई। गुर्जर पुरूषों को महान कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने तथा आवश्यकता पड़ने पर उन्हें संबल प्रदान करने वाली गुर्जर–नारियां ही रही है। भारतीय साहित्य तथा इतिहास में गुर्जर सम्राटों तथा महान योद्धाओं का वर्णन प्रर्याप्त मात्रा में हुआ है। इसी प्रकार भारतीय साहित्य तथा इतिहास में गुर्जर ललनाओं का भी विषद वर्णन हुआ है।

गुर्जर नारियों का देश प्रेम विश्व विख्यात है। इस काम ने देश को ऐसी अनेक ललनाएं प्रदान की जिन्होनें देश की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा त्याग और बलिदान दिया। पन्ना धाय, जीजाबाई, वेद माता गायत्री देवी, नयना देवी,

साडो माता, दीपकंवर, मैना देवी, ऐलादी देवी, मीनल देवी, अप्पा देवी, नायिका देवी, देदा रानी, जैती, खेती, रामप्यारी, जोनी, धौला, माली, सरबा, राधा, व सुजाता[3] इत्यादि का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। इनके अतिरिक्त अनेक राष्ट्रभक्त गुर्जर महिलाएँ हो चुकी है। जिन्होनें अपने देश के लिए महान कार्य किए प्रस्तुत शोध आलेख में साहस एवं बलिदान का शाश्वत प्रतीक : वीरांगना पन्नाधाय के बारे में विवरण है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

1. भारतीय साहित्य तथा इतिहास में वर्णित वीरांगनाओं के साहस एवं बलिदान का अध्ययन करना।
2. भारतीय धर्म एवं संस्कृति के संरक्षण के लिए किए गए संघर्षो का अध्ययन करना।
3. भारतीय साहित्य तथा इतिहास में गुर्जर ललनाओं के योगदान का अध्ययन करना।
4. विश्व इतिहास में पन्नाधाय द्वारा स्थापित स्वामी भक्ति के अद्वितीय उदाहरण का अध्ययन करना।
5. नारी शक्ति के त्याग व बलिदान का अध्ययन करना।
6. मेवाड़ के गौरवमय इतिहास का अध्ययन करना।

भारतीय इतिहास में पन्ना धाय का नाम मातृत्व, वात्सल्य, करुणा, साहस एवं बलिदान का शाश्वत प्रतीक बन गया है। मेवाड राजसिंहासन के उत्तराधिकारी बालक उदयसिंह को बनवीर से बचाने के लिए पन्ना धाय जो मार्ग निकालती है, वह अद्वितीय है। अपने बेटे को उदय के स्थान पर सुलाकर पन्ना उदय को राजसेवक बारी के द्वारा सुरक्षित स्थान तक पहुँचा देती है। अन्ततः पन्नाधाय की सूझबूझ और हिम्मत से उदय सिंह राजसिंहासन पर आरुढ होता है। कथानक प्रख्यात है और इसे आधार बनाकर अनेक रचनाएँ लिखी गयी है। शचीन सेनगुप्ता ने बांग्ला में पन्ना दाई नाम से नाटक लिखा। इसी नाटक का अनुवाद नेमिचन्द्र जैन ने पन्ना धाय शीर्षक से किया है। रंगकर्म के विभिन्न पक्षों में स्वर्गीय नेमिचन्द्र जैन की विलक्षण क्षमताओं से हिन्दी संसार सुपरिचित है। पन्ना धाय नाटक उनकी कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।[4]

पन्ना धाय राणा साँगा के पुत्र उदयसिंह की धाय माँ थी। पन्ना धाय किसी राजपरिवार की सदस्य नहीं थी। अपना सर्वस्व स्वामी को अर्पण करने वाली वीरांगना पन्ना धाय का जन्म चित्तौड़गढ के पास माता जी की पाण्डोली गांव के निवासी हरचन्द हाँकला के यहॉ हुआ था[5] और ससुराल पक्ष में पन्ना धाय आमेट ठिकाने के पास गाँव कमेरी के दषवंता के वंष चौहान गुर्जर हिन्दु जी के पौत्र गुर्जर लाला चौहान के पुत्र गुर्जर सूरजमल चौहान की पत्नी थी।[6] सूरजमल चौहान चित्तौड़ की लड़ाई में महाराणा साँगा के साथ शहीद हो गया। पन्नाधाय ने मोसर गँगोज कुम्भलगढ में किया।[7] इस अवसर पर बडवा जेतराम को दातारी में कड़ा सरोपाव की दातारीदीनी[8]।

राणा साँगा के पुत्र उदयसिंह को माँ के स्थान पर दूध पिलाने के कारण पन्ना धाय माँ कहलाई थी। पन्ना का पुत्र चन्दन और राजकुमार उदयसिंह साथ–साथ बडे हुए थे। उदयसिंह को पन्ना ने अपने पुत्र के समान पाला था। पन्नाधाय ने उदयसिंह की माँ कर्मावती के सामूहिक आत्म बलिदान द्वारा स्वर्गारोहण पर बालक की परवरिश करने का दायित्व संभाला था। पन्ना ने पूरी लगन से बालक की परवरिश और सुरक्षा की। पन्ना चित्तौड़ के कुम्भा महल में रहती थी।

**महाराणा उदय सिंह के राज्याभिषेक से पूर्व मेवाड़ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि**

राणा सांगा के सात पुत्र थे उनमें से दो बड़े पुत्र तो बचपन में ही गुजर गये। तीसरा बेटा रतन सिंह राणा सांगा की मृत्यु के उपरान्त चित्तौड़ के सिंहासन पर सवत् 1586 (1530 ई0) में बैठा।[9] अहेरिया उत्सव (वासंती मृगया) के आते ही राणा अपने सरदारों के साथ शिकार खेलने के लिए जंगल की तरफ चल पड़े। यहॉ पर बूँदी के हाड़ा नरेष सूरजमल और राणा रतन सिंह (सूरजमल का बहनोई) के मध्य हुए संघर्ष में रतनसिंह मारा गया। राणा की अकाल मृत्यु के उपरान्त संवत् 1591 में विक्रमाजीत चित्तौड़ के सिंहासन पर बैठा।[10] विक्रमाजीत में एक भी राज्योचित गुण नहीं था। उसने अपने बड़े भाई के गुणों को छोड़कर उसके अवगुणों को ग्रहण किया। इन सबके परिणामस्वरुप मेवाड़ के सभी सरदार उससे अप्रसन्न हो गए। राणा के प्रति सारी प्रीति और ममता जाती रही शासन अव्यवस्थित हो गया और पीड़ित प्रजा कातर भाव से कहने लगी की फिर से 'पोप बाई' का राज आ गया है। गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने राजपूतों की इस आपसी फूट को देखकर लाभ उठाने तथा अपने एक पूर्वाधिकारी मुज्जफर की पराजय और चित्तौड़ में बंदी बना कर रखे गये अपमान का बदला चुकाने का अच्छा अवसर देखा। उसने मालवा से सहायता प्राप्त कर राणा के विरूद्ध चढ़ाई कर दी। घेराबंदी और अंतिम धावे के दौरान 32000 राजपूत मारे गये थे। यह चित्तौड़ का दूसरा शाका था अर्थात् दूसरी बार चित्तौड़ का विनाश हुआ था। महारानी कर्णवती (कर्मावती) 13000 राजपूत स्त्रियों के साथ अग्नि में कूद पड़ी और जौहर कर लिया। दुःख, कष्ट और अनेक पीड़ाओं को सहन करने के बाद विक्रमाजीत को चित्तौड़ का सिंहासन पुनः नसीब हुआ। इस पर भी उसके चाल चलन में किसी प्रकार का सुधार न आया। थोड़े दिनो बाद ही वह अपने सरदारों पर पुनः अत्याचार करने लगा। जिस कर्मचंद ने उसके पिता को विपत्ति के समय आश्रय दिया था और जो इस समय आयु के अंतिम दिनों में था। उस पर भरी सभा में प्रहार किया। क्रोधित सरदारों ने विक्रमाजीत को सिंहासन से उतारकर पृथ्वीराज (सांगा का भाई) की उपपत्नी के पुत्र बनवीर को नया राजा घोषित कर दिया।

**पुत्र का बलिदान**

बनवीर भी निकम्मा निकला और उसने सिंहासन पर स्थायी कब्जा करने के लिए विक्रमाजीत को मार दिया इसकी सूचना लेकर बारी (नाई) भय से कांपता हुआ पन्नाधाय के पास पहुँचा पन्ना समझ गई एक हत्या दूसरी हत्या की शुरूआत है। उसने फलों का बॉस का टोकरा उठाया और उसमें राजकुमार उदयसिंह को सुलाकर उसके ऊपर वृक्षों के पत्ते आदि रखकर अच्छी तरह से ढक दिया और नाई को कहा कि वे तत्काल इस टोकरे को दुर्ग के बाहर ले जाये। बनवीर को धोखा देने के उद्देश्य से अपने पुत्र को उदयसिंह के पलंग पर सुला दिया। बनवीर रक्तरंजित तलवार लिये उदयसिंह के कक्ष में आया और उसके बारे में पूछा। पन्ना ने उदयसिंह के

पलंग की ओर संकेत किया जिस पर उसका पुत्र सोया था। बनवीर ने पन्ना के पुत्र को उदयसिंह समझकर मार डाला। पन्ना अपनी ऑखों के सामने अपने पुत्र के वध को अविचलित रूप से देखती रही। बनवीर को पता न लगे इसलिए वह ऑसू भी नही बहा पाई। बनवीर के जाने के बाद अपने मृत पुत्र की लाश को चुमकर राजकुमार को सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए निकल पड़ी। स्वामी भक्त वीरांगना पन्ना धन्य है जिसने अपने कर्तव्य–पूर्ति में अपनी ऑखो के तारे पुत्र का बलिदान देकर मेवाड़ राजवंश को बचाया।

**मेवाड़ का वैधानिक महाराणा**

पुत्र की मृत्यु के बाद पन्ना बहुत दिनों तक शरण के लिए भटकती रही पर दुष्ट बनवीर के खतरे के डर से कई राजकुल जिन्हें पन्ना को आश्रय देना चाहिए था, उन्होनें पन्ना को आश्रय नहीं दिया। पन्ना जगह–जगह राजद्रोहियों से बचती कतराती तथा स्वामिभक्त प्रतीत होने वाले प्रजाजनों के सामने अपने को जाहिर करती भटकती रही। देवला के सिंहराव डूँगरपुर के रावल आशकरण ने भी आश्रय देने के लिए मना कर दिया। तब वह भीलों के संरक्षण में अरावली के दुर्गम रास्तों को तय करके कमल मीर (कुम्भलगढ) पहुँची। वहॉ इस समय दीप्रा वणिक वंशी आशा शाह नामक व्यक्ति का अधिकार था। पन्नाधाय ने सारा वृतान्त सुनाने के बाद बालक राजकुमार को आश्रय देने की प्रार्थना की। मॉ के परामर्श व आदेश पर कुम्भलगढ का शाह उन्हें आश्रय देने के लिए सहमत हो गया। आशाशाह ने उसको अपना भांजा कहकर प्रसिद्ध किया। पन्ना वापस लौट गई। आशाशाह के साथ रहते हुये उदयसिंह को सात वर्ष बीत गये। धीरे–धीरे मेवाड़ सरदारों को इस बात का पता लगा और वह कुम्भलगढ में एकत्रित होने लगे। आशाशाह ने मेवाड़ के वृद्ध चौहान सामन्त को राजकुमार को सुपुर्द कर दिया। सोनगरे सरदार ने अपनी पुत्री का विवाह उदयसिंह के साथ करके उसकी स्थिति को और अधिक सुदृढ कर दिया। 13 वर्ष की आयु में मेवाड़ी उमरावों ने उदयसिंह को अपना राजा स्वीकार कर लिया और कुम्भलगढ में उदयसिंह का राजतिलक किया गया। 1540 ई0 में उदयसिंह मेवाड़ का वैधानिक महाराणा बन गया। जब उदयसिंह की शक्ति संगठित हो गई तो वह सेना सहित चित्तौड़ की तरफ बढा। घमासान युद्ध के बाद बनवीर चित्तौड़ से भाग निकला और दुर्ग पर उदयसिंह का अधिकार हो गया। 1540 ई0 तक उदयसिंह सम्पूर्ण मेवाड़ का स्वामी बन गया।[11] बनवीर अपने परिवार तथा सम्पति के साथ दक्षिण की तरफ चला गया उसकी संतति से ही नागपुर के भौंसले वंश की उत्पत्ति हुई।[12]

**निष्कर्ष**

मेवाड़ के इतिहास में जिस गौरव के साथ प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप को याद किया जाता है, उसी गौरव के साथ पन्ना धाय का नाम भी लिया जाता है, जिसने स्वामीभक्ति को सर्वोपरि मानते हुए अपने पुत्र चन्दन का बलिदान दे दिया था। इतिहास में पन्ना धाय का नाम स्वामिभक्ति के शिरमोरों में स्वर्णाक्षरों में लिखा गया है। स्वामीभक्ति तथा त्वरित प्रत्युत्पन्नमति दोनों के लिए श्रद्धेया निःस्वार्थी पन्ना धाय जिसने अपने स्वामी की प्राण रक्षा के लिए अपने पुत्र का बलिदान दे दिया को उसी दिन से सिसोदिया कुल वीरांगना के रूप में सम्मान मिल रहा है। अपने स्वामी की प्राण रक्षा के लिए इस तरह का बलिदान इतिहास में पढ़ने को और कहीं नहीं मिलता। कोई नारी अपने राजा के पुत्र की रक्षा के लिए इतना बड़ा बलिदान करे यह बहुत बड़ी बात है। पन्ना धाय एक बहुत बड़ा उदाहरण है। नारी शक्ति के त्याग और बलिदान का।

**संदर्भ**

1. *डॉ. एल.बी. राम अनन्त :– शाक्य भुति प्रभा (पुस्तक–पत्रिका) पृ. 10*
2. *डॉ. रामशरण शर्मा :– भारतीय सामन्तवाद*
3. *वचनेश त्रिपाठी दिनांक 16.01.94 के साप्ताहिक पांचजन्य में प्रकाशित लेख*
4. *शचीन सेन गुप्ता :– बांग्ला नाटक पन्ना दाई*
5. *उदयलाल धाभाई :– पन्ना धाय का त्याग और चंदन का बलिदान*
6. *सम्पादक तीर्थाकंर घोष व महाराणा अरविंद सिंह का साक्षात्कार :– सण्डे मेल मेगजीन वाल्यूम 5 अंक 10 पृष्ठ 4–10 पर प्रकाशित*
7. *डॉ. जे.के.ओझा :– पन्ना धाय का 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व' कांकरोली सेमिनार जुलाई 2005 में प्रस्तुत शोध आलेख*
8. *गुर्जर निर्देशक पत्रिका :– नवम्बर 2005 अंक 81 पृष्ठ 8 पर प्रकाशित लेख*
9. *कर्नल जेम्स टॉड :– राजस्थान का इतिहास पृष्ठ 155*
10. *कर्नल जेम्स टॉड :– राजस्थान का इतिहास पृष्ठ 156*
11. *शर्मा–व्यास :– राजस्थान के इतिहास का सर्वेक्षण पृष्ठ 315*
12. *कर्नल जेम्स टॉड :– राजस्थान का इतिहास पृष्ठ 162*